Dr DHANVIR PRASAD
ASSISTANT PROFESSOR (G-T)
DEPT OF PSYCHOLOGY
C.M.J COLLEGE DONWARIHAT KHUTAUNA
L.N.M.U DARBHANGA
MOBILE NO:-6206696451

CREATIVITY

सर्जनात्मक का तात्पर्य नई चीज की रचना करने की योग्यता है । इसका अर्थ विधि द्वारा समस्या को हल करने की योग्यता है ।यदि कोई व्यक्ति नई वस्तु का निर्माण करता है, नई खोज करता है, समस्या-समाधान का नया तरीका निकालता है, तो कहा जाएगा कि वह व्यक्ति सर्जनात्मक है।चैपलिन के अनुसार- " सर्जनात्मक का तात्पर्य कला या यंत्र-विज्ञान में नई आकृतियों को उत्पन्न करने अथवा नवीन विधियों द्वारा समस्याओं को हल करने की योग्यता से है ।

बैरोन के अनुसार, - सर्जनात्मक ऐसे कार्य को उत्पन करने की योग्यता है, जो नवीन तथा उपयुक्त हो ।

सर्जनात्मक का स्वरूप या विशेषताएँ

सर्जनात्मक की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

1. सर्जनात्मक एक मानसिक योग्यता है:-

   इसकी एक मुख्य विशेषता यह है कि यह एक मानसिक योग्यता है । इस विशेषता के बल पर यह बुद्धि के समान है ।

2. सर्जनात्मक नवीनता से सम्बद्ध योग्यता है:-

   सर्जनात्मक की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसका संबंध नवीन कार्य से होता है ।यदि कोई व्यक्ति नई चीजों का निर्माण करता है या आविष्कार करता है तो समझा जाता है कि वह व्यक्ति सर्जनात्मक है ।रेबर तथा रेबर ने कहा है कि सर्जनात्मकता की यह मौलिक विशेषता है जो इसे बुद्धि या अन्य मानसिक योग्यता से भिन्न बना देती है।

3. सर्जनात्मक का समबन्ध नये ढंग से कार्य करने की विधि से है :-

सर्जनात्मकता की एक विशेषता नये ढंग से किसी कार्य को करने या नये ढंग से किसी समस्या के समाधान करने की विधि है। यदि कोई व्यक्ति किसी समस्या का समाधान नये ढंग से करता हो तो समझा जायेगा कि उसमें सर्जनात्मकता कीयोग्यता उपलब्ध है ।

4. सर्जनात्मकता का समबन्ध अप्राचिक क्रिया से होता है:-

सर्जनात्मकतामें अप्राचिक होने की विशेषता पायी जाती है ।

5. सर्जनात्मकता का समबन्ध उपयोगी कार्य से होता है-

उपयोगी का अर्थ है वह कार्य जो मूल्यवान या महत्वपूर्ण हो,जिससे समाज तथा राष्ट्र के लोग लाभान्वित हो सके ।जैसे- किसी व्यक्ति ने हवाई

जहाज का निर्माण किया तो इससे सभी लोग लाभान्वित हो रहे हैं ।